ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE

SHODH SARITA

SHODH SARITA
Vol. 6, Issue 24, October-December, 2019
Page Nos. 53-57

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

21वीं सदी में मंटो की कहानियों की प्रासंगिकता एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Umesh Kumar Singh*

शोध सारांश

इस शोध पत्र में सदाअत हसन मंटो पहले हिंदुस्तान के लेखक हैं, उसके बाद भारत और पकिस्तान के बंटवारे के बाद वे भले ही पाकिस्तान के लेखक हैं, उन्होंने अपने 43 वर्ष के अपने पूरे जीवन काल में लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी हैं उनमें से उनकी कुछ कहानियों में विशेषकर काली सलवार, खोल दो (कहानी पकिस्तान जाने के बाद लिखी), टोबा टेकसिंह, टिटवाल का कुत्ता, ठंडा गोस्त, हतक, नारा, यजीद, आदि का भारत और पाकिस्तान के अंतरराष्ट्रीय सन्दर्भ में विश्लेषात्मक अध्यन करके उनकी सोच और आज के सन्दर्भ में उसकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है. मंटो ने हमें अपने आप पर हंसने का अवसर दिया है।

Keywords : विभाजन – बंटवारा– सरोकार – उपेक्षित – उत्पीडित – वास्तविकता – प्रासंगिकता – अफसानों – तज्जिया

शोध प्रविधि : इसमें आधुनिक आलोचनात्मक और समीक्षात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है ताकि शोध को अमली जामा पहनाया जा सके।

प्रस्तावना

मॉरीशस में आज जिस महान लेखक की कहानियों का विश्लेषण 21 वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में शोध पत्र में चर्चा करने जा रहा हूँ उनका नाम सआदत हसन मंटो है, उनका जन्म 11 मई 1912, समराला, लुधियाना, पंजाब भारत में हुआ था. मंटो भारत पाकिस्तान के बटवारे के समय सन 1947 में पकिस्तान चले गए थे. उनकी मृत्यु मात्र 43 साल की उम्र में 18 जनवरी 1955 लाहौर, पकिस्तान में हुई थी. मंटो साहब ने मरने से पहले अपनी कब्र के लिए लाहौर, पाकिस्तान में मजार पर कतबा स्वयं लिखवाया था, जो आज भी देखा जा सकता है "यहाँ सआदत हसन मंटो दफन हैं और उसके दिल में फन और अफ़सानों का राज भी मिटटी के नीचे दबा है, वह अपने आप से प्रश्न करता है कि इस सिंफ का उस्ताद कौन है खुदा या वो. उन्होंने अपने नाम की बुनियाद पर कश्मीरी होने का दावा किया था. मंटो एक कश्मीरी नाम है. इस बात पर उन्होंने 1954 में पंडित जवाहरलाल नेहरु को एक खुला ख़त भी लिखा था. जवाहरलाल खुद भी अपने आप को कश्मीरी ब्राम्हण कहते थे. मंटो अपने बाप की दूसरी बीबी का बेटा था और उसके तीन सौतेले भाई वकालत करके मुंबई चले गए थे फिर वहां से लन्दन चले गए थे. मंटो ने अमृतसर पंजाब की जिन्दगी अपने घर में अपनी बहन नासिरा के साथ गुजारी थी।

इस प्रकार सदाअत हसन मंटो एशिया के बहुत चहेते लेखक मुंशी प्रेमचंद और रविन्द्र नाथ टैगौर की तरह भारत, पकिस्तान और बंगलादेश आदि तीनों देशों के लोगों के साझी विरासत के बहुत चहेते और हमेशा शुर्खियों में बने रहने वाले कहानीकार रहे हैं. आप उन्हें उर्दू का लेखक कह सकते हैं. लेकिन वे असल में हिन्दुस्तानी में लिखते थे. भारत की हिन्दुस्तानीजबान उन दिनों उर्दू और देवनागरी दो स्क्रिप्ट में लिखी जाती थी. भारत के राष्ट्रपिता कहे जाने वाले मोहनदास करमचंद गाँधी को आज सारी दुनिया महात्मा गांधी के से जानती है. महात्मा गाँधी हिन्दुस्तानी तालीम के हामी थे. आज भी वर्धा, महाराष्ट्र, भारत में गाँधी द्वारा स्थापित हिन्दुस्तानी तालीम का एक स्कूल कायम है।

मेरी नजर में आज भी पकिस्तान के आधे से अधिक लोग उसी हिन्दुस्तान के बाशिंदे लगते हैं जिन्हें हम कभी रिस्ते–नाते में चचा–चची, फूफू और फूफी, ताया–तायाजान और खाला–खालाजान, अम्मी, मौसी, बाबा जान और दादी जान कहते न थकते थे. यह वही हिंदुस्तान है जहां आलू पराठा, जलेबी, पूड़ी–शब्जी, रोटी, फुल्के, दाल–चावल, पापड़, आचार, चटनी, पड़ाके (उत्तर भारत), गोलगप्पे, गुपचुप, टिक्की, चाट, छोले–भटूरे, पोंगल, अप्पे (मीठे, नमकीन), पुट, कल्तपम, लच्छा पराठा इडली, डोसा, और परिधानों में अचकन/शेरवानी, धोती (मर्दानी/पुरुष), कुर्ता, शलवार–कुर्ती, धोती (ज़नानी), कमीज़–पाजामा, ओढनी, जेवरों में नथ, बुँदे, अंगूँठी, मंगल सूत्र, कोंधनी, सिंदूर भरना, मांग भरना, आँखों में काजल लगाना, दुल्हन का सिंगार आदि आज भी पाया जाता है और हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बाशिंदे आज भी उसी तरह प्रयोग करते हैं जैसे बंटवारे/ विभाजन से पहले किया करते थे।

*Department of Hindi and comparative literature, Mahatma Gandhi antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Gandhi Hills, wardha &4 42001, Maharashtra

मैं अपनी बात की शुरुआत अमरीका के लेखक अर्नेष्ट मिलर हेमिंग्वे के कथन से करना चाहूंगा. "हैमिंग्वे कहते हैं कि लेखक सदैव सत्य का उद्घाटन करता है "मंटो मुझे सदैव से सत्य का उद्घाटन करने वाले लेखक लगे हैं, उनका सोचने का ढंग, हिंदुओं और मुसलमानों दोनों कोमों से अलग रहा है. विभाजन के दौर में हिंदुस्तान के लोग कह रहे थे कि एक लाख हिंदू और एक लाख मुसलमान मारे गए और मंटो कह रहे थे, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बंटवारे ने दो लाख इनसानों की जान ले ली. इस इनसानियत के क़त्ल की सच्चाई को दुनियां के किसी भी देश में बने अच्छे से अच्छे साबुन अथवा डिटर्जेंट पाउडर से साफ़ नहीं किया जा सकता हैं।

मंटो एक ऐसे लेखक हैं जिसका जनजीवन से गहरा सरोकार है वे उपेक्षित और उत्पीडित जनता के लेखक हैं, उन्होंने समाज में जो सबसे निचले स्तर पर है, उसके जीवन यथार्थ को पूरे सरोकार के साथ साहित्य में लाने का प्रयास किया है, इसीलिए वेश्याएं उनके कहानियों में आती हैं, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है. मंटो किसी स्त्री के वेश्या बनने की विडम्बनापूर्ण स्थिति पर सवाल खड़ा करते हैं. उस दौर के लोग उन्हें असल में मोचियों, तवायफों और तांगेवालों का साहित्यकार कहा करते थे किंतु सच में मंटों एक लोकतांत्रिक लेखक और एक लोकतांत्रिक इनसान थे।

सआदत हसन मंटो को लोग उनकी जिन बदनाम कहानियों के कारण हिंदुस्तान और पाकिस्तान के लोग उन्हे अच्छी तरह से जानते और बखूबी पहचानते हैं किन्तु मेरी दृष्टि उनकी कहानियों में भारतीय जीवन की कड़वी सच्चाई के अतिरिक्त संवेदना ही दिखलाई पड़ती है. इसी क्रम में उनकी चंद कहानियों का जिक्र किया जा सकता है जिनमें खोल दो, टोबा टेकसिंह, टिटवाल का कुत्ता, काली सलवार, हटाक, नारा, ठंडा गोस्त, यजीद, आदि प्रमुख हैं।

मंटो ने खोल दो कहानी पकिस्तान जाने के बाद लिखी थी. "खोल दो" कहानी भारतदृपाकिस्तान के बंटवारे की त्रासदी पर लिखी कहानी है. इस कहानी का एक किरदार शिराजुद्दीन जो बहुत बुजुर्ग है। वह विभाजन के बाद अमृतसर से रेल द्वारा चलता है. मुगलपुरा में ट्रेन रुकती है. उसे कुछ होश आता है तो वह अपनी बेटी सकीना को खोजता है. उसे कुछ जवान लोग मिलते हैं, वह उनसे मदत मांगता है और अपनी बेटी की पहचान उन लोगों को बताता है. उसकी बेटी गोरवर्ण की है और उसके गाल पर बड़ा काला तिल है. वे लोग उसे आश्वासन देते हैं कि वह उसे तलाश करेंगे।

एक दिन उन लोगों को वो लड़की मिलती है जिसके गाल पर काला तिल होता है. उसे पकड़कर अपने साथ ले जाते हैं.एक दिन कुछ लोग एक लाश उठाकर हॉस्पिटल लाते हैं जिसके गाल पर काला तिल होता है. बूढा व्यक्ति उसको देखने जाता है. वह एक लाश के अतिरिक्त कुछ नहीं होती है. यह उसकी बेटी शकीना ही है. बूढा कहता है खिड़की खोल दो, उस बेजान औरत के हाथों में हरकत होती है. वे अपनी सलवार का नाडा खोलकर सलवार सरका देती है.यही इस कहानी की त्रासदी है. मंटो की कहानी खोल दो में उन रजाकारों का चित्रण किया है जो बंटवारे की अफरा–तफरी में अपने ही बहम–मजहब के लोगों का नाजायज फायदा उठाने से नहीं चुकाते है. खोल दो कहानी का सच इसलिए भी अर्थपूर्ण है कि हिन्दू शरणार्थियों के साथ भी बिलकुल यही गुजरा. वैसे भी मंटो की निगाह में हिन्दू और मुसलमान में बहुत अधिक अंतर नहीं मानते हैं।

मंटो साहब ने अपनी कहानियों में देश विभाजन पर खूब लिखा है किन्तु उनके अतिरिक्त भी देश विभाजन की भयंकर त्रासदी को चित्रित करने वाला साहित्य लिखने वालों की श्रेणी में यशपाल और उनके झूठा–सच को किसी मायने में भूला नहीं जा सकता है लेकिन बहुत बारीकी से विभाजन की त्रासदी का वर्णन मंटो के यहाँ पर किया गया है. इसी क्रम में टोबा टेकसिंह और टिटवाल का कुत्ता आदि कहानियां रखी जा सकती हैं. मंटो अगर फिरका परत होते या इंसानियत के रखवाले न होते तो क्या वे "खोल दो", इंसानियत के नाम पर दाग जैसी कहानी पाकिस्तान जाने के बाद लिखते।

टोबा टेकसिंह कहानी का मुख्या किरदार बिशन सिंह नाम का एक सरदार होता है. जो टोबा टेकसिंह का रहने वाला था. वह पंद्रह वर्ष से सोया नहीं है उसके पैर सूज गए हैं.हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बंटवारे के बाद पागलों की अदला–बदली की जाती है किन्तु वह इस बंटवारे के पक्ष में नहीं है. अंत में वह अपने पैर जमाकर खड़ा हो जाता है. उसे उसी स्थिति में छोड़कर दूसरे लोगो की अदला–बदली की जाती है. अंत में वह दोनों देशों के कटीले तारों के बीच में खाली स्थान पर मुंह के बल पड़ा होता है. भारत पाकिस्तान का बंटवारा हो गया था लेकिन उनके मन में किसी स्थान पर बंटवारे की टीस बनी हुई थी जिसे उन्होंने तोबा टेकसिंह कहानी लिखकर अपने विचार व्यक्त करते हैं. टोबा टेकसिंह कहानी को आज के सन्दर्भ में पढ़ा जाना अति–आवश्यक है. इस कहानी में बंटवारे के बाद पागल खाने के पागलों को शिफ्ट किया जाता है, उसे लेकर पागलों के बीच जो बात हो रही है, वह हम सब पर उंगली उठाती है और विभाजन को सवालों के घेरे में खडा करती है।

दूसरी कहानी 'टिटवाल का कुत्ता' दो देशों (भारत–पकिस्तान) की सीमा पर जवान, भारत और पाकिस्तान की सीमा की सुरक्षा कर रहे हैं. वह बीच–बीच में ऊब मिटाने के लिए एक दूसरे पर गोलियां भी चलते हैं. इसी बीच एक कुत्ता सीमा पर जवानों के पास आता है। इस कहानी में दर्ज हालात हालांकि बंटवारे के समाया के बाद का जिक्र करते हैं लेलीन भारत और पाकिस्तान की सीमा पर हालात आज उससे अच्छे

नहीं हैं , और न अच्छे कहे जा सकते हैं। सरहदों के दोनों तरफ रहने वाले बाशिंदों के लोग हालातों के शिकार तो होते रहते हैं लेकिन वे लोग अपनी आने वाली नस्लों की हिफाजत भी नहीं कर पाते हैं।

जमादार हरनाम सिंह रात के आखिरी पहर में एक कुत्ता के भोंकने की आवाज सुनते हैं, जमादार थैले से बिस्कुट निकला कर उसके लिए फेंक देते हैं, ठहर कहीं यह पाकिस्तानी तो नहीं है, नहीं जमादार साहब "चपड़ झुन–झुन" हिन्दुस्तानी है ! शरणार्थी है बेचारा. उसके बाद उसके गले में रस्सी बांधकर उस पर "चपड़ झुन–झुन हिन्दुस्तानी" लिख कर उसे दूसरी सीमा की तरफ भेज देते हैं।

पाकिस्तानी मोर्चे के लोग उससे पूंछते हैं. रात में कहाँ था और उसके गले का पट्टा पढ़ते हैं. सैयार हिम्मत खां चपड झुन–झुन का उत्तर पाकिस्तानी मिलाकर लिखते हैं. "सपड सुन–सुन पाकिस्तानी". और उस कुत्ते से कहते हैं गद्दारी मत करना, गद्दारी की सजा मौत होती है. वह लौटकर हिन्दुस्तानी सीमा में आता है. हरनाम सिंह कुत्ते को आता देखते ही गोली चलाते हैं आखिर में उसकी टांग में गोली लग जाती है, दूसरी तरफ की गोली उस कुत्ते को मार देती है –हरनाम सिंह कहता है साला कुत्ते की मौत मारा गया।

'टोबा टेकसिंह' और 'टिथवाल का कुत्ता' दोनों कहानियाँ भारत और पकिस्तान के विभाजन की भयंकर त्रासदी को बड़े स्पस्ट तौर से व्याख्यायित करती हैं. इस कहानी में सरदार बिशन सिंह के रूप में स्वयं मंटो उपस्थित हैं जो विभाजन को नहीं स्वीकारते हैं और 'तिथवाल का कुत्ता' शरणार्थी रूप में स्वयं जनता दिखलाई पड़ती है।

टोबा टेक सिंह और ठंडा गोस्त जैसी कहानियाँ इनसानों को और समाज को आइना दिखा देती हैं. हम दूसरे शब्दों में इस प्रकार कह सकते हैं कि ये कहानियां हमारे अंतर्मन को गहराई तक झकझोर कर रख देती हैं, इतना ही बहुत नहीं है बल्कि दोनों कहानियाँ हमारे समक्ष कई प्रश्न खड़े करती हैं क्योंकि मंटो ने इन कहानियों को अपने अनुभव की आंच पर पकाकर उतारा है, न कि कहीं और से पढ़कर या सुनकर. हमें इस तरह का उदाहारण शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास देवदास के किरदारों में देखने को मिल सकता है।

"काली सलवार" कहानी की मुख्य किरदार सुल्ताना और खुदाबक्श हैं. मुहर्रम के लिए सुल्ताना को काली सलवार की जरूरत है. वह जो वैश्या का पेशा करती है वह दिल्ली में नहीं चल रहा है उसके हाथों के गहने एक–एक कर सब पेट भरने के लिए बिक गए हैं.खुदाबक्श का भी कोई काम नहीं कर रहा है. शंकर काली सलवार लाता है लेकिन सुल्ताना को अपने बुंदों से हाथ धोना पड़ता है. लेकिन जब सुल्ताना मुख्तार के कानों में बुँदे देखती है उसके बाद दोनों कुछ क्षण के लिए खामोश हो जाती हैं. सुल्ताना और मुख्तार दोनों महिलाएं गरीबी की चक्की में पिस रही हैं. उन्हें गरीबी अपनी जरूरत पूरी करने के लिए अपने बदन की एक–एक वस्तु से हाथ धोने पड़ते हैं।

मंटो ने वेश्या की जिंदगी पर बहुत कुछ लिखा है उन्होंने विषयों की जिंदगी को बहुत नजदीक से समझा है और उसपर उन्होंने नाक भौं नहीं सिकोडा है. काली सलवार एक वेश्या की कहानी है. लोग मानते हैं कि वैश्या का कोई आत्म–सम्मान नहीं होता है लेकिन मंटो ने इस कहानी में दिखाया है कि कैसे कस्टमर के बर्ताव से वेश्या के आत्म–सम्मान को ठेस पहुंचती है. मंटो साहब की इसे खूबी कहें तो रत्ती भर भी गलत न होगा क्योंकि उन्होंने सदैव वेश्याओं को भी इनसान की तरह देखा था।

मंटो की 'हतक' कहानी वेश्याओं की जिंदगी पर लिखी हिन्दुस्तानी कहानीकार की पहली कहानी कही जा सकता है लेकिन आज वेश्याओं के लिए वेश्या और तबायफ दोनों शब्द प्रयोग किया जाने लगे हैं। यहाँ पर तबायफ और वेश्या का अंतर बताना बहुत हो जरूरी हो जाता है। तबायफ नांच–गाकर और अपनी कला बेचकर अपना गुजारा करती है। जबकि वेश्या अपना शरीर बेचकर अपना गुजारा करती है। तबायफ और वेश्या दोनों हो अपना गुजारा करने के लिए कार्य करती हैं। आज फ्रांस और अन्य विकसित देशों में इसे कार्य ही माना जाता है। विकसित देशों के समाज में इस व्यवसाय को गलत नजरिए से नहीं देखा जाता है। मंटो की हतक कहानी में दर्द, आक्रोश, और असीमित मानवीयता जैसी विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं. हतक कहानी की नायिका सुगंधी बहुत थकी–हारी है, वह अपने कार्य की थकान से देर रात तक बहुत ऊब चुकी है किन्तु उसका दलाल उसे ग्राहक से सामने परोसना चाहता है। वह न चाहते हुये भी किसी तरह तैयार होकर ग्राहक के सामने उपस्थित होती है। ग्राहक अपनी कार में बैठे हुए टॉर्च का प्रकाश सुगंधी के चेहरे पर डालता है और उसे एक नजर देखते ही नापसंद कर देता है। यह बात उस औरत सुगंधी को बहुत नागवार गुजरती है। इस कहानी में वेश्यावृत्ति की ज़लालत का ऐसा चित्र खींचा गया है जिसमें सुगंधी नामक तबायफ औरत को नापसंद कर उसे अपमानित किया गया है. मेरी दृष्टि में औरत में इतनी खूबियाँ होती हैं कि उन्हें गिना नहीं सकता हूँ। औरत को औरत कहा जा सकता है, उसका विश्लेषण किसी भी सूरत में नहीं किया जा सकता है। इस दुनियाँ में औरत आज, कल और सदैव से इज्जत पाने के योग्य रही है।

मंटो हतक के सामान एक अन्य कहानी 'नारा' को रखा जा सकता है जिसमें मूंगफली बेचने वाले की बेबसी के आक्रोश को व्यक्त किया गया है. नारा और हतकमें बहुत अधिक अंतर नहीं है. हतक में मंटो की दृष्टि वेश्या पर है और नारा कहानी में एक मूंगफली बेचने वाले पर है. इस प्रकार इन दोनों कहानियों में सुगंधी और केशव लाल उस व्यवस्था के शिकार हैं जो आदमी को आदमी से एक स्तर नीचे जीवन जीने के लिए विवश करती है. यह

एक ऐसी व्यवस्था है जहां पर मानवीयता के लिए एक सूत भर भी गुंजायश नहीं हैं।

मंटो ने 'यजीद' कहानी को भी पकिस्तान में जाने के बाद लिखा था. यह मेरे मतानुसार बहुत अच्छी कहानी कही जा सकती है. इस कहानी में विभाजन की भयंकर त्रासदी को पूरी तरह से ह्बहू अभिव्यक्त किया गया है क्योंकि मंटो स्वयं स्वीकारते हैं कि विभाजन के बाद भारत और पकिस्तान की जनता दो भागों में विभाजित होकर भी सच्चे अर्थ में एक ही थी. इस कहानी को लिखने के बाद पकिस्तान में मंटो को कुछ अति चरम और उदार पंथियों का विरोध और सामना करना पड़ा था. "जरूरी नहीं कि यह भी वही यजीद हो. उसने पानी बंद किया था, यह खोलेगा, मन को बेतरह छू जाता है." सच मायने में मंटो चाहते थे किदोनों देश एक हो जायें और जनता फिर उसी तरह एक होकर जीवन व्यतीत करें. इस कहानी के माध्यम से मंटो अपनी ही नहीं लाखों लोगों की इक्षा को अभिव्यक्त करते हैं।

निष्कर्ष

मंटो की आठ कहानियों के विश्लेषण के पश्चात निःसंकोच कहा जा सकता है कि वे अपने दौर के हिंदी और उर्दू के प्रसिद्द साहित्यकार थे, हैं और सदैव रहेंगे. इतना ही नहीं हम उन्हें फ्रांस के मोपासां जो एक प्रसिद्ध फ्रेंच साहित्यकार थे, जिनकी रचना "चर्बी की गुडिया" एक तवाइफ़ की जिंदगी पर लिखी गई उन के दौर की प्रसिद्ध कहानी कहीं जाती है और अर्नेष्ट मिलर हेमिंग्वे जिन्हें जैम व्सक डंद दक जीम में के लिए नोबुल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था और बाद में अमरीका के लेखकों ने उनकी विचार धारा के चलते लेखक मानने से ही इनकार कर दिया था. उसके बाद बाद में हेमिंग्वेने 1961 में अपनी रिवाल्वर की गोली से आत्महत्या कर ली थी. मंटो को अमरीका के हेमिंग्वे, फ्रांस के मोपासा, हिंदी और उर्दू भाषा के प्रेमचंद और जर्मन भाषी फ्रेंज के काफ्का के समान अथवा समकक्ष साहित्यकार कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि इन साहित्यकारों ने दुनिया की कभी कोई परवाह किये बिना निरंतर लिखना जारी रखा और दुनिया के सामने एक मिशाल कायम की थी।

टोबा टेकसिंह कहानी को आज के सन्दर्भ में पढ़ा जाना आवश्यक है क्योंकि इस कहानी में बंटवारे के बाद पागलखाने के पागलों को शिफ्ट किया जाता है उसे लेकर पागलों के बीच जो बात हो रही है वह हम सब पर उंगली उठती है और विभाजन को सवालों के घेरे में खड़ा करती है. मंटो पर उनके लेखन के चलते जिनमें प्रमुख रूप से ठंडा गोस्त और काली सलवार जैसी कहानियों पर अश्लीलता के आरोप लगाए गए और मुकद्दमे चलाये गए, परन्तु बाद में मुकद्दमों की सुनवाई कर रहे जज ने भी कहा कि इनमें अश्लीलता नहीं है, और कहीं से भी मंटो की कोई कहानी कामोत्तेजना भड़काने वाली नहीं हैं. हमारे समाज ने उसे भूखा मारा, उसे पागल खाने पहुँचाया, उसे अस्पताल में और आखिर में उसे यहाँ तक मजबूर कर दिया कि वह इनसान को नहीं बल्कि शराब को अपना दोस्त समझने को मजबूर हो गया था।

सदाअत हसन मंटो भारत मां के सच्चे लाल हैं जो इंसानियत के रखवाले अपने लेखन में नजर आते हैं।

मंटो की कहानियाँ पहले भी प्रासंगिक थी और आज भी उनके दौर से अधिक प्रासंगिक हैं उन्होंने अपनी कहानियों में समाज की जिन बारीकियों और विसंगतियों का चित्रण किया था, वह आज के दौर में उसी तरह मैजूद है जैसे पहले थीं. मंटो ने अपनी कहानियों को अपने भोगे हुए यथार्थ को ही कागज़ पर उतारा है, कहीं से पढ़कर अथवा सुनकर नहीं. आज उनके गुजर जाने के बाद भी वे और उनकी कहानियाँ उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उनके दौर में रही है। इस प्रकार मेरी दृष्टि में मंटो पूरे एशिया के एकमात्र लोकतंत्र में विश्वास रखने वाले लेखक और इंसानियत के रखवाले पहले इनसान और रचनाकार थे।

सन्दर्भ :–

1. अलेनडिसूलियर Alain De*soulieres] Book 'सआदत हसन मंटो और टोबा टेकसिंह और दूसरी कहानियां', (फ्रांसीसी भाषा में) प्रकाशन वर्ष 2008, पृष्ट सं.460, प्रेस Bussreie Montrond France.
2. हिन्दुस्तानी तालीम, स्कूल, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत.
3. काली सलवार,(3) अलेनडिसूलियर Alain De*soulieres, Book 'सआदत हसन मंटो और टोबा टेकसिंह और दूसरी कहानियां', (फ्रांसीसी भाषा में) प्रकाशन वर्ष 2008, पृष्ट सं.44–65,
4. खोल दो (10) अलेनडिसूलियर Alain De*soulieres, Book 'सआदत हसन मंटो और टोबा टेकसिंह और दूसरी कहानियां', (फ्रांसीसी भाषा में) प्रकाशन वर्ष 2008, पृष्ट सं. 176–181,
5. टोबा टेकसिंह (15) अलेनडिसूलियर Alain De*soulieres, Book 'सआदत हसन मंटो और टोबा टेकसिंह और दूसरी कहानियां', (फ्रांसीसी भाषा में) प्रकाशन वर्ष 2008, पृष्ट सं.221–231
6. टिटवाल का कुत्ता. (13) अलेनडिसूलियर Alain De*soulieres] Book 'सआदत हसन मंटो और टोबा टेकसिंह और दूसरी कहानियां', (फ्रांसीसी भाषा में) प्रकाशन वर्ष 2008, पृष्ट सं.211–220
7. ठंडा गोस्त (16) अलेनडिसूलियर Alain De*soulieres] Book 'सआदत हसन मंटो और टोबा टेकसिंह और दूसरी कहानियां', (फ्रांसीसी भाषा में) प्रकाशन वर्ष 2008, पृष्ट सं. 232–241,

8. नारा, मंटो की तीस कहानिया, नीलाम प्रकाशन इलाहाबाद, 5–खुशरो बाग़ रोड, पृष्ट 119
9. हतक,मंटो की तीस कहानिया, नीलाम प्रकाशन इलाहाबाद, 5–खुशरो बाग़ रोड, पृष्ट 270
10. यज़ीद मंटो की तीस कहानिया, नीलाम प्रकाशन इलाहाबाद, 5–खुशरो बाग़ रोड, पृष्ट 25
11. शरीफ़न (11) अलेनडिसूलियर Alain De*soulieres, Book 'सआदत हसन मंटो और टोबा टेकसिंह और दूसरी कहानियां', (फ्रांसीसी भाषा में) प्रकाशन वर्ष 2008; पृष्ट सं. 176–181,

12. इस शोध पत्र में डॉ ए. रामताली, विभागाध्यक्ष, उर्दू विभाग, भारतीय भाषा संकाय, महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, रिपब्लिक ऑफ़ मॉरिशस, मॉरिशस के प्रति हृदय से बहुत आभारी हूँ जिन्होंने 'सआदत हसन मंटो और टोबा टेकसिंह और दूसरी कहानियां', को (फ्रांसीसी भाषा में) फ्रांसिसी भाषा की पुस्तक को पढ़कर और अनुवाद करके विस्तार से बताया और विचार विमर्श कर अपना भरपूर सहयोग दिया तथा वे इस शोध पत्र के द्वितीय लेखक हैं।

❐❐❐

MAH MUL/03051/2012 | ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | Oct. To Dec. 2020 Issue-36, Vol-11 | 0179

में देवता वसु थे। उन्होंने ब्रह्मचर्य का कड़ा पालन करके योग विद्या द्वारा अपने शरीर को पुष्य कर लिया था।

माना जाता है कि भीष्म ही युद्ध में सबसे अधिक उम्र के थे। अपने पिता को यह भी वचन दिया था, कि वे आजीवन हस्तिनापुर के सिंहासन के प्रति वफादार रहेंगे, एवम उसकी सेवा करेंगे. उनकी इसी भीष्म प्रतिज्ञा के कारण इनका नाम भीष्म पड़ा. और इसी के कारण महाराज शांतनु ने भीष्म को इच्छा मृत्यु का वरदान दिया, जिसके अनुसार जब तक वे हस्तिनापुर के सिंहासन को सुरक्षित हाथो में नहीं सौप देते, तब तक वे मृत्यु का आलिंगन नहीं कर सकते हैं.

संदर्भ ग्रंथ

(१) जयसंहिता किंवा आदिभरतम केशवरामकाशास्त्री

(२) भारतसंहिता के प्रमुख अंश डो. भारतीबेहन के शेलत

(३) महाभारत में धर्म डो. शकुन्तला रानी तिवारी

४) महाभारत की कथाएँ महेश शर्मा

५) महाभारत ऐक दिव्य – दृष्टि सुमन कुमार शर्मा

❑❑❑

45

अदम की कविता का विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. उमेश कुमार सिंह
एसोशिएट प्रोफेसर, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, साहित्य विद्यापीठ,
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र

****

शोध सारांश:

अदम की कविता में गरीबी, सामाजिक सरोकारों, राजनीति का सच, एक दर्पण की तरह सच्चाई एवं समय से संघर्ष करते रहने से भटककर यदा–कदा ही कभी किसी दूसरे रास्ते पर कदम रखा होगा। अदम की कविता अपने देशकाल और मानव संघर्ष का इतिहास ही नहीं है बल्कि सामाजिक सरोकार का एक मजबूत दस्तावेज माना जा सकता है। उनकी कविता में समकालीन घटनायें, आम आदमी का दुख–दर्द, भूख–प्यास, मजबूरी एवं सामाजिक सरोकारों के रूप में खुलकर संघर्ष करती हुई प्रतिबिम्बित होती है। अदम की कविता को पढ़ते हुये बार– बार यह एहसास होता है कि बदलाव की धरती पूरी तरह तैयार है उसमें अदम की कविता मात्र एक लौ का काम करती है।

Key words सामाजिक – Social Sociable सरोकार – Concern nLrkost & Independent Document लुहार – Blackउपजी, पगडंडी–Footpath, आमादा – Solicitous, मनोहारी – Attractive, विबाई – Bivaai, kibe on the heel, जुल्मों – Atrocites cat &Barren Banjar

शोध प्रविधि: इस शोध पत्र में आधुनिक आलोचनात्मक एवं समीक्षात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | Oct. To Dec. 2020 Issue-36, Vol-11 | 0180

प्रस्तावना

अड़ोनों ने लिखा है कि जर्मनों के कान्सट्रेशन केम्प्स की सच्चाई जान लेने के बाद कविता लिखना असंभव हो गया है क्योंकि इन सबको जान लेने के बाद फूल पत्तियों की बात करना, कलावादी साहित्य को पढ़कर आनंद लेना, उसके साथ जुड़ना मुश्किल हो जाता है। अदम की कविता में विद्रोह, गरीबी, सामाजिक सरोकारों और राजनीति से भटककर शायद भूले–भटके ही कभी किसी दूसरे रास्ते पर कदम रखा होगा। अदम की कविता अपने देशकाल और जन संघर्ष का इतिहास ही नहीं है बल्कि सामाजिक सरोकार का एक मजबूत दस्तावेज है। उनकी कविता में समकालीन घटनायें, आम आदमी का दुख–दर्द, भूख–प्यास, मजबूरी एवं सामाजिक सरोकारों के रूप में खुलकर विद्रोह करती हुई प्रतिबिम्बित होती हैं। अदम की कविता को पढ़ते हुये बार– बार यह एहसास होता है कि बगावत की धरती पूरी तरह तैयार है उसमें अदम की कविता मात्र एक चिंगारी का काम करती है।

अदम एक कवि होने के नाते किसी बात को कहने से कभी नहीं चूकते हैं वे सदैव गाँव में रहे और सदैव गाँव के विकास करने पर विशेष बल देते रहे हैं। वे अपनी कविता में लुहार के हथोड़े की चोट के मानिन्द प्रहार करते हुए कहते हैं। भारत में अनेक वर्षों से गाँवों का विकास फाइलों के अंबार में दब सा गया है और फाइलों से निकलकर आगे नहीं बढ़ता है, न जाने और कितने सालों में विकास गावों में पहुँच पाएगा। अदम उन लोगों के पक्षधर हैं और सदैव उन्हीं की रहनुमाई करते हुये नजर आते हैं जिनका जिक्र वेदों में हाशिये पर भी नहीं किया गया है। वेद भारत की संस्कृति की धरोहर हैं। दुनियाँ में वेदों को आदिग्रंथ माना जाता है। इसीलिए अदम उन सीधे–साधे लोगों को आगाह करते हुए कहते हैं।

अदम जब समाज के लोगों के दुख–दर्द को रौशनी में लाकर नया इतिहास लिखने की बात करते हैं। तब इस बात से सहज ही अंदाज लगाया जा सकता है कि वे वर्तमान व्यवस्था से अधिक संतुष्ट दिखाई नहीं देते हैं, तभी तो वे जीवन भर दर्द की स्याही में अपनी कलम डुबोकर नगाड़े की तरह तीखी आवाज करते हुए शब्दों में, समाज के सताए हुये लोगों की पारवार रहित पीड़ा को, स्वयं महसूस करते हुए उसके बारे में लिखने के लिए उस सागर तट पर स्थित प्रथम प्रकाश स्तम्भ की तरह अटल होकर लिखते रहे है।

अदम गोंडवी ने एकदम वेबाक तरीके से विधायक निवास के कच्चे सच की सच्चाई को अपनी कविता में बयां ही नहीं किया है बल्कि उन्होंने इस कविता के द्वारा जनता के खिदमतगारों की ऐसी कलई खोली है जिसका कोई मुकाबला करना बहुत आसान है। उनकी कविता में रामराज को व्हिस्की और भुने हुए काजू के साथ विधायक निवास में ठहाकों के साथ उतर आने की बात बयान करते हैं। इतना ही नहीं है उन्होंने इस बात को अपने पूरे होशो हवास में विद्रोह करने के अतिरिक्त किसी अन्य विकल्प के न होने की बात कही हैं।

काजू भुने हैं प्लेट में, व्हिस्की गिलास में।
उतारा है रामराज्य विधायक निवास मेंष्
आजादी का ये जश्न मनायें वो किस तरह,
वो आ गए फुटपाथ पे घर की तलाश मेंष २
जनता के पास एक ही चारा है, बगावत,
ये बात कह रहा हूँ मैं पूरे होशो–हवास मेंष ३

अदम की कविता में गरीबी और गरीबों की बस्ती से बड़ा नजदीकी रिश्ता जान पड़ता है। तभी तो एक अदम कबीर की तरह भीड़ के बीचों–बीच खड़े होकर अपने गाँव, अपने देश की गरीबी और भुखमरी का खुले आम ऐलान करते हुए कहते है, जब भी और जहां भी फटे कपड़े पहनकर कोई व्यक्ति जा रहा हो। तब समझ लेना वह पगडंडी शर्तिया अदम के गाँव को जाती है। शायर ने अपने गाँव के रास्ते के लिए किसी सड़क और चकरोट की बात नहीं की है बल्कि वे तो किसी पगडंडी की बात करते हैं। अदम गरीबी में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और बौद्ध की गरीबी की बात नहीं करते हैं। उस देश की गरीबी की बात करते हैं जिस देश के बारे में कभी गांधी जी ने कहा था, भारत गावों में बसता है। आजाद भारत का वह गांव अब भी कितना उपेक्षित है, अदम इसे

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | Oct. To Dec. 2020 Issue-36, Vol-11 | 0180

प्रस्तावना

अड़ोर्नो ने लिखा है कि जर्मनों के कान्सट्रेशन केंम्प्स की सच्चाई जान लेने के बाद कविता लिखना असंभव हो गया है क्योंकि इन सबको जान लेने के बाद फूल पत्तियों की बात करना, कलावादी साहित्य को पढ़कर आनंद लेना, उसके साथ जुड़ना मुश्किल हो जाता है। अदम की कविता में विद्रोह, गरीबी, सामाजिक सरोकारों और राजनीति से भटककर शायद भूले—भटके ही कभी किसी दूसरे रास्ते पर कदम रखा होगा। अदम की कविता अपने देशकाल और जन संघर्ष का इतिहास ही नहीं है बल्कि सामाजिक सरोकार का एक मजबूत दस्तावेज है। उनकी कविता में समकालीन घटनायें, आम आदमी का दुख—दर्द, भूख—प्यास, मजबूरी एवं सामाजिक सरोकारों के रूप में खुलकर विद्रोह करती हुई प्रतिबिम्बित होती हैं। अदम की कविता को पढ़ते हुये बार— बार यह एहसास होता है कि बगावत की धरती पूरी तरह तैयार है उसमें अदम की कविता मात्र एक चिंगारी का काम करती है।

अदम एक कवि होने के नाते किसी बात को कहने से कभी नहीं चूकते हैं वे सदैव गाँव में रहे और सदैव गाँव के विकास करने पर विशेष बल देते रहे हैं। वे अपनी कविता में लुहार के हथोड़े की चोट के मानिन्द प्रहार करते हुए कहते हैं। भारत में अनेक वर्षो से गाँवों का विकास फाइलों के अंबार में दब सा गया है और फाइलों से निकलकर आगे नहीं बढ़ता है, न जाने और कितने सालों में विकास गावों में पहुँच पाएगा। अदम उन लोगों के पक्षधर हैं और सदैव उन्हीं की रहनुमाई करते हुये नजर आते हैं जिनका जिक्र वेदों में हाशिये पर भी नहीं किया गया है। वेद भारत की संस्कृति की धरोहर हैं। दुनियाँ में वेदों को आदिग्रंथ माना जाता है। इसीलिए अदम उन सीधे—साधे लोगों को आगाह करते हुए कहते हैं।

अदम जब समाज के लोगों के दुख—दर्द को रौशनी में लाकर नया इतिहास लिखने की बात करते हैं। तब इस बात से सहज ही अंदाज लगाया जा सकता है कि वे वर्तमान व्यवस्था से अधिक संतुष्ट दिखाई नहीं देते हैं, तभी तो वे जीवन भर दर्द की स्याही में अपनी कलम डुबोकर नगाड़े की तरह तीखी आवाज करते हुए शब्दों में, समाज के सताए हुये लोगों की पारवार रहित पीड़ा को, स्वयं महसूस करते हुए उसके बारे में लिखने के लिए उस सागर तट पर स्थित प्रथम प्रकाश स्तम्भ की तरह अटल होकर लिखते रहे हैं।

अदम गोंडवी ने एकदम वेबाक तरीके से विधायक निवास के कच्चे सच की सच्चाई को अपनी कविता में बयां ही नहीं किया है बल्कि उन्होने इस कविता के द्वारा जनता के खिदमतगारों की ऐसी कलई खोली है जिसका कोई मुकाबला करना बहुत आसान है। उनकी कविता में रामराज को व्हिस्की और भुने हुए काजू के साथ विधायक निवास में ठहाकों के साथ उतर आने की बात बयान करते हैं। इतना ही नहीं है उन्होने इस बात को अपने पूरे होशो हवास में विद्रोह करने के अतिरिक्त किसी अन्य विकल्प के न होने की बात कही हैं।

काजू भुने हैं प्लेट में, व्हिस्की गिलास में।
उतारा है रामराज्य विधायक निवास मेंष्१
आजादी का ये जश्न मनायें वो किस तरह,
वो आ गए फुटपाथ पे घर की तलाश मेंष २
जनता के पास एक ही चारा है, बगावत,
ये बात कह रहा हूँ मैं पूरे होशो—हवास मेंष ३

अदम की कविता में गरीबी और गरीबों की बस्ती से बड़ा नजदीकी रिश्ता जान पड़ता है। तभी तो एक अदम कबीर की तरह भीड़ के बीचों—बीच खड़े होकर अपने गाँव, अपने देश की गरीबी और भुखमरी का खुले आम ऐलान करते हुए कहते है, जब भी और जहां भी फटे कपड़े पहनकर कोई व्यक्ति जा रहा हो। तब समझ लेना वह पगडंडी शर्तिया अदम के गाँव को जाती है। शायर ने अपने गाँव के रास्ते के लिए किसी सड़क और चकरोट की बात नहीं की है बल्कि वे तो किसी पगडंडी की बात करते हैं। अदम गरीबी में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और बौद्ध की गरीबी की बात नहीं करते हैं। उस देश की गरीबी की बात करते है जिस देश के बारे में कभी गांधी जी ने कहा था, भारत गावों में बसता है। आजाद भारत का वह गांव अब भी कितना उपेक्षित है, अदम इसे

MAH MUL/03051/2012 ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | Oct. To Dec. 2020 Issue-36, Vol-11 | 0181

आपकी कविता में प्रत्यक्ष दिखाते हैं। आज भी सत्तर से अधिक साल के प्रजातन्त्र के सूरज के प्रकाश की किरण गावों तक नहीं पहुंच सकी है।

फटे कपड़ों में तन ढांके गुजरता हो जहां कोई,
समझ लेना वो पगडंडी अदम के गाँव जाती है। ४

यह सत्य है कि अदम अपनी कविता में कदम–कदम पर बगावत और विद्रोह की बात करते हुए नजर आते हैं किन्तु जिस समय वे बच्चों की आंख पानीली देखते हैं। तब तब वे अधिक जुनून में बगावत करने पर आमादा हो उठते हैं।

बगावत के फूल खिलते हैं दिल के सूखे दरिया में,
मैं जब भी देखता हूँ आँख बच्चों की पनीली है ५

दुनियाँ में फ्रेंच लोग किसी बात को उल्टा कहने के अपने एक निराले अंदाज के लिए जाने जाते हैं। आज यदि अधिक ठंड है तब वे कहेंगे आज बहुत ठंड नहीं है। ठीक उसी तरह अदम भी अपने गाँव की बदहाली का जिक्र एक निराले ढंग से करते हैं वे बस इतना कहते हैं। सड़क हैं किन्तु उन पर सिर्फ गडढ़े ही हैं। बिजली और पानी की बात छोड़ ही दीजिए। अर्थात नहीं हैं और सबसे अंत में कहते हैं हमारे शहर गोंडा की फिजा कितनी सुहानी और मनोहारी है।

महज सड़कों पे गड्ढ़े, न बिजली है न पानी है।
हमारे शहर गोंडा की फिजा कितनी सुहानी हैद ६

अदम ने देश के दंगों की असली वजह को पहचाना ही नहीं है बल्कि उनके कारणों को भी बड़ी बारीकी से जाना है। तभी तो वे अपनी कविता में बयान करते हैं। शहरों में जब–जब दंगे होते हैं तब–तब गरीब और गरीबों के ही घर जलाए जाते हैं। तब–तब इन दंगों से कोठियों के लॉन के दृश्यों के मंजर (अट्रैक्शन) बढ़ जाते हैं, मेहनतकश लोगों के हाथों में श्रम करते–करते छाले पड़े हुए हैं और इसी श्रम के नाते उनके पैरों की विबाई फटी गयीं हैं। इन्हीं मेहनतकश लोगों की मेहनत के बल पर महल बनते ही नहीं हैं बल्कि उनमें खूबसूरती भी इन्हीं की शक्ति के बल पर दिखाई देती है।

शहर के दंगों में जब भी मुफलिसों के घर जले,
कोठियों की लान का मंजर सलोना हो गया ७

अदम की कविता में जहां भुखमरी की आग में जलने की बात है अर्थात जहां लोगों को रोटी मिलने का टोटा पड़ा हुआ है और दूसरी ओर एक वर्ग उन लोगों को भटकाटकर अपने मुफात के लिए इसे नसीब का खेल बता रहेहैं। वे बहुत चिंतित दिखाई देते हैं क्योंकि जब से गांव में लोगों की हर शाम भुखमरी में गुजरने लगी है। उसी समय से गरीब से गरीब के रिस्ते बेमानी होकर रह गए हैं। अब तो इन जुल्मों की इंतेहा हो गई है। गरीब के आँसू अब शोलों में ढलेंगे अर्थात अब जुल्म के खिलाफ विद्रोह होकर रहेने की बात करते ।

इक हम हैं भुखमरी के जहन्नुम में जल रहे,
इक आप है दुहरा रहे किस्से नसीब के ८
उतरी है जबसे गाँव में फाकाकशी की शाम,
बेमानी होके रह गए रिश्ते करीब के ९
इक हाथ में कलाम है और इक हाथ में कुदाल,
वाबसता है जमीन से सपने अदीब के १०
कब तक सहेंगे जुल्म रफीकोंदूरकीब के।
शोलों में अब ढलेंगे ये आँसू गरीब के ११

अदम अपने आस–पास के उन हरामखोर लोगों को भी नहीं बक्शते हैं जो मेहनत न करके मेहनकशों के श्रम पर पलते रहे हैं किन्तु अब वो उम्र के अंतिम पड़ाव में प्रधान बनाकर प्रथम पंक्ति में आकर बैठ गए हैं। यही लोग आज उस बंजर और परती जमीन के पट्टे श्रमिक मेहतकशों को दे रहें है जिस जमीन में किसी अनाज की पैदावार नहीं नहीं ली जा सकती है। यह जमीन श्रमिकों को मियादी बुखार में वर्जित रोटी देने के समान है क्योंकि मियादी बुखार की कमजोरी की हालत में रोटी देना वर्जित होता है। अर्थात जो अपनी मेहनत मजदूरी के बल पर रोटी कमा के खा लेते हैं। उससे भी कहीं हाथ न धो बैठें।

जितने हरामखोर थे कुर्बो–जवार में।
परधान बनके आ गये अगली कतार में १२
दीवार फाँदने में यूं जिनका रिकार्ड था,
वे चौधरी बने हैं उमर के उतार में१३
बंजर जमीन पट्टे में दे रहे हैं आप,
ये रोटी का टुकड़ा है मियादी बुखार में १४

अदम अपने देश वासियों द्वारा अपने देश वासियों पर होते हुए जुल्मों से बहुत विचलित होते है। तभी तो वे जुल्मों करने वालों से कहते है इन जुल्मों की निरंतरता को तेज और तेज बनाकर रखिए ताकि दुनियाँ वाले चंगेज खाँ के जुल्मों के इतिहास को भूलकर अपने देश के लोगों के जुल्मों के इतिहास को याद करते रहें। इनसान को मजहब के नाम पर सदैव छला जाता रहा है

तेजतर रखिए मुसलसल जुल्म के एहसास को।
भूल जाये आदमी चंगेज के इतिहास को १५
मजहबी दंगों को भड़काकर मसीहाई करो।
हर कदम पे तोड़ दो इंसान के विश्वास को १६

अदम जब अपनी कविता में, अपने मृत शरीर को, अपने कंधों पर उठाने की बात करते हैं। तब वे अपनी जड़ों से उखड़ने की बात करते हैं, विस्थापित होने की बात करते है। उन्हें अपने गाँव से बिछुड़ने की बहुत भारी पीड़ा होती है। सच में देखा जाय तो अपने वतन से उखड़ने के बाद कोई भी व्यक्ति जीवन जीता अवश्य है किन्तु वह एक जीवित मृत शरीर की तरह हो जाता है। इस बात की पुष्टि जोश मलीहाबादी शायर की भारत छोड़कर पाकिस्तान जाते वक्त लिखी गजल से की जा सकती है। (ऐ मलीहाबाद के रंगी गुलिस्तां सलाम —— जोश मलीहाबादी की गजल)

यूं खुद की लाश अपने कंधों पे उठाए हैं।
ऐ शहर के बाशिंदों ! हम गांव से आए है। १७

अदम जैसा कवि भी विचलित होने से नहीं बचता है। जब वह मजहब पर बारीकी से गौर करता है। वह अपनी कविता के माध्यम से कहता है— क्या दुनियाँ की किसी धार्मिक पुस्तक में लिखा है कि शोषण करना पाप है अन्याय है शायद नहीं ? इसलिए इस दुनियाँ के लोग शोषण करने से किसी मोके को अपने हाथ से नहीं जाने देते हैं. इस सबको अपनी आँख से देखकर शायर मजहब को दिखावा और डोंग तक कहने से नहीं चूकता है।

क्या किसी सदग्रंथ में आया कि शोषण पाप है।
इसलिए कहता हूँ मजहब ढोंग है अभिपाप है। १८

अदम हाशिए के उन श्रमिक और खेतिहर मजदूर लोगों की निरंतर बात करते हैं जिन्हें गरम रोटी की खुशबू भी नहीं मिल पाती है, वे लोग रोटी मिल जाने पर संतुष्ट होने का अहसास करते हैं। वे किसी परलोकिक प्यार के मधुमास को लेकर क्या करेंगे, जिनके पेट भरने के लिए रोटी के लाले पड़े हैं।

गरम रोटी की महक पागल बना देती ही हमें।
पारलौकिक प्यार का मधुमास लेकर क्या करें १९

अदम अपनी कविता में जिन गरीबों की बात करते है, उनकी पीढ़िया सदियों से गरीबी में जीवन यापन कर रही है। उन हाशिये पर रहने वाले लोगों के जीवन को तवज्जो देने की बात करते हैं, जो इतिहास और साहित्य से नदारद हैं। देश की उस विशेष जाति और समाज ओर ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं जिस जाति के श्रम के बल पर पूरा समाज स्वस्थ और अच्छा जीवन जीने का दंभ भरता है।

आइए महसूस करिए जिंदगी के ताप को।
मैं चमारों की गली तक ले चलूँगा आपको
जिस गली में भुखमरी की यातना से ऊबकर।
मर गई फुलिया बिचारी कल कुएं में कूदकर २०

निष्कर्ष—

अदम की कविता के इन तथ्यों के आलोक और प्रस्तुत पुष्ट प्रमाणों के आधार पर निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है। कि अदम की कविता को हिंदी की मानक भाषा की कविता कहने से इंकार नहीं किया जा सकता है। इसके साथ ही अदम की कविता हिन्दी उर्दू की खाई को एक पुल की तरह पाटने वाली कविता प्रतीत होती हैं तथा उनकी कविता जीवन की तल्ख सच्चाई की व्याख्या प्रस्तुत करती हुई परिलक्षित होती है किन्तु अंत में इतना अवश्य कहा जा सकता है, अदम की कविता और गजलों में मासूक का चेहरा नहीं बल्कि गरीबी की नजदीकियां, समय से मुठभेड़ है। अदम व्यवस्था की आंख में आँख डालकर ही नहीं बल्कि उंगली डालकर बात करते है अदम के यह तेवर किसी और कवि के यहां नहीं मिलते है।

संदर्भ:

१. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६६
२. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं.

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal | Oct. To Dec. 2020
Issue-36, Vol-11 | 0183

६६
३. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६६
४. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ९५
५. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ३८
६. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ३९
७. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ४९
८. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६१
९. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६१
१०. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६१
११. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६१
१२. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६७
१३. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६७
१४. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६७
१५. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ७८
१६. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ७८
१७. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ७६
१८. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. १०८
१९. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ४१
२०. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. १००

46

जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में चित्रित पंजाबी शरणार्थियों और भूमिहीन किसानों की समस्याएँ

डी. लक्ष्मी, शोधार्थिनी,
हिन्दी विभाग, आन्ध्र विश्वविद्यालय,
विशाखपट्टणम् - ३ आन्ध्र प्रदेश।

****

ग्राम-चेतना प्रधान उपन्यासकार जगदीश चन्द्र ने किसानों, विशेषकर पंजाब के किसानों की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। शरणार्थियों के रूप में दुर्भर जीवन बितानेवाले किसानों की समस्याओं को सुलझाने की आवश्यकता एवं कर्तव्य की तीव्र उपेक्षा करनेवाली सरकार की नीतियों का जगदीश चन्द्र जोरदार खण्डन करते हैं। जगदीश चन्द्र जी के साहित्य में पंजावी जीवन का पूरा सौन्दर्य नजर आता है। गाँव, गाँवों का सहजीवन, रहन-सहन, आचार-विचार, विश्वास-अंधविश्वास, जाति-प्रथा, भेदभाव, उदारता, जीवन संघर्ष, झगडे, मारपीट, प्रेम-अवज्ञा समाज मन का ऐसा एक भी कोना नहीं जो छूट गया हो। यह सही है कि उनके उपन्यास गाँव को लेकर ज्यादा संवेदनशील नजर आते हैं। कुछ उपन्यासों में फौजी जीवन के त्यागी रूप को प्रस्तुत किया है।

पंजाबी लोगों का मुख्य व्यवसाय खेतीवारी है। खेतीबारी के अलावा स्वभावत: दिलेर और बहादूर होने के कारण यहाँ के लोग सेना में भरती हो जाते हैं। गाँवों में चाय और कॉफी को प्रचलित करने में इनकी वडी भूमिका है। शहर के लोग धीरे-धीरे व्यापार, उद्योग धंधों तथा नौकरियों की तरफ आकर्षित होते चले गए। गाँवों में लोग संयुक्त परिवार में रहते हैं। घर का मुखिया अर्थात् वुजुर्ग निर्विरोध पूरे घर की व्यवस्था संभालता है परंतु आजकल, विशेषकर शहरों में यह प्रथा समाप्त होती जा रही है।

□धरती धन न अपना□ □कभी न छोडें खेत□ □मुट्ठी भर कौंकर□ तथा □घास गोदाम□ में उपन्यासकार ने ईमानदारी के साथ कृषक वर्ग की समस्याओं का अंकन किया है और उनकी समस्याओं के मूल कारणों को भी स्पष्ट करते हुए किसानों की निर्धनता को दूर करने के पक्ष में मानवीय धरातल पर सोचने का आग्रह किया है। जगदीश चन्द्र सामाजिक व्यवस्था की □रीढ□ किसान की जिन्दगी के यथार्थ को व्यक्त करने में सतत प्रयासत रहते हैं। □धरती धन न अपना□ □कभी न छोडें खेत□ □मुट्ठी भर कौंकर□ तथा □घास गोदाम□ का किसान अपना- अपना भाग्य लेकर जीवित दिखाई पडता

GOVT. OF INDIA- RNI NO. UPBIL/2014/56766
UGC Approved Care Listed Journal
ISSN 2348-2397

100

DIS

शोध सरिता

An International Multidisciplinary Quarterly
Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

• Vol. 8 • Issue 29 • January to March 2021

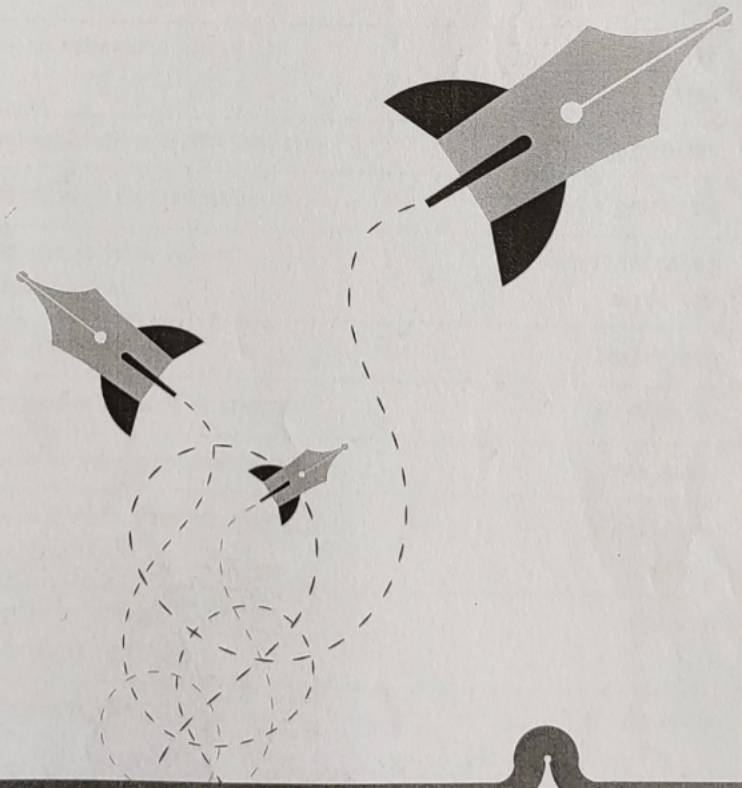

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

CONTENTS

S. No.	Topic		Page No.
1.	भारतीय – अमेरिकी दास : स्वरूप एवं अभिव्यक्ति	सुधीर प्रताप सिंह कुन्दन यादव	1
2.	ग्रामीण विकास में पंचायती राज व्यवस्था की प्रासांगिकता	डॉ0 सुभाष कुमार	10
3.	वैश्वीकरण के दौर में भारतीय समाज में दलितों की प्रस्थिति एवं अस्मिता का समाजशास्त्रीय अध्ययन	सुरेश चन्द डॉ0 अनिल कुमार सिंह	15
4.	जातिवाद का कोर्ट मार्शल	सुधीर प्रताप सिंह अमित राजन राय	19
5.	कोविड–19 संकट में ग्रामीण श्रमिकों के विकास में सरकारी योजनाओं की प्रासंगिकता : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	सुधा कुमारी	24
6.	स्वतंत्र भारत में हिन्दी भाषा की संवैधानिक स्थिति एक अध्ययन	डॉ0 सरिता सिंह	28
7.	परितोष से आत्महत्या तक.....	डॉ0 सुनिता एम. मोटे	32
8.	भारत में पंचायती राज : एक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ0 रवि कान्त शुक्ल	35
9.	अभिव्यक्ति की खोज का महाआख्यान : 'अंधेरे में'	सुधीर प्रताप सिंह अनिरुद्ध कुमार	40
10.	हिंदी साहित्य में स्त्री पर श्रेष्ठतम काव्य गोपी विरह वेदना	डॉ0 उमेश कुमार सिंह	47
11.	सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजय नाथ	डॉ0 मनोज कुमार तिवारी	52
12.	दिव्यांग बच्चों के मानवीय एवं विधिक अधिकार (सशक्तिकरण के विशेष संदर्भ में)	डॉ0 विनीता अग्रवाल अनुपमा पटेल	56
13.	भारत विभाजन और सिक्का बदल गया	डॉ0 अंशु यादव	61
14.	भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था के मॉडल की प्रासंगिकता	डॉ0 विक्रम सिंह	65
15.	अभिलेखों के वर्गीकरण का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	वंदना अग्रवाल	70
16.	ब्रिटिशकालीन हरियाणा में शैक्षणिक दशा एवं परिवर्तन	अशोक कुमार डॉ0 सतेन्द्र	75
17.	भारतीय समाज में भक्ति का सम्प्रेषण : कुछ विचारधाराओं का अनुशीलन	सन्ध्या शर्मा	79
18.	संस्कृत साहित्य में पर्यावरण–संरक्षण	डॉ0 हरिओम	83

19.	ग्रामीण समाज मे सुराजी गाँव (नरवा, गरूवा, घुरूवा, बाड़ी) योजना के प्रभाव का अध्ययन (छत्तीसगढ राज्य के राजनांदगाँव जिले के संदर्भ में)	एस कुमार सपना शर्मा सारस्वत	88
20.	केदारनाथ सिंह के काव्य में शब्द चयन	डॉ0 राजकुमार खटीक	92
21.	विद्यार्थियों की समस्या–समाधान योग्यता का अध्ययन आदत के संबंध में अध्ययन करना	डॉ0 विभा मिश्रा	96
22.	उत्तर प्रदेश में परिचालित जीवन बीमा की बहुस्तरीय योजनाओं एवं कार्यक्रमों का विस्तृत अध्ययन (कानपुर जनपद के विशेष संदर्भ में)	डॉ0 गोपेन्द्र कुमार पाण्डेय गौरव मिश्र	100
23.	पाली जिले में कृषि प्रणालियों का अध्ययन	पुष्पेन्द्र सिंह	105
24.	आदिवासी विमर्श आधारित हिन्दी कहानियों में सामाजिक जन–जीवन : एक अध्ययन	ललिता स्वामी	109
25.	वैदिक साहित्य में आरण्यक ग्रन्थों का वर्ण्य विषय	डॉ० कनक लता	113
26.	उत्तराखण्ड – पलायन की समस्या	डॉ0 संजय सिंह खत्री	116
27.	स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के नैतिक निर्णय का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन	डॉ0 गिरीश कुमार द्विवेदी डॉ0 श्रवण कुमार	120
28.	भारत में सुशासन के समक्ष चुनौतियां तथा सुधार हेतु आवश्यक सुझाव	डॉ0 सुनीता त्रिपाठी	124
29.	प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन की प्रासंगिकता	डॉ० वन्दना गुप्ता	129
30.	औपनिवेशिक भारतीय समाज में सतीप्रथा– एक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ0 शशी नौटियाल	133
31.	भारत के स्टाक मार्केट पर कोविड–19 का प्रभाव	डॉ0 मंजरी मिश्रा	137
32.	किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर विद्यालय के शैक्षिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन	डॉ0 श्रीमती स्वाती जाजू	142
33.	तिवा जनजाति के लोक उत्सव	मयुरी मजुमदार	147
34.	माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की आईसीटी का उनके शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रभाव अध्ययन	विद्याभूषण शर्मा डॉ0 संजीत कुमार साहू	151
35.	छत्तीसगढ़ में अनुसूचित जनजाति परिवारों के स्वास्थ्य और शिक्षा के स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन	भागवत प्रसाद साहू डॉ0 बी. एल. सोनेकर	158
36.	योग एवं अहिंसक व्यक्तित्व	डॉ0 मनोज कुमार टाक	163
37.	भारत–स्वीडन के बीच सामाजिक, सांस्कृतिक सम्बन्ध	डॉ0 जितेन्द्र कुमार पाण्डेय	167

38.	छत्तीसगढ़ में बागवानी की स्थिति : संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ	विनोद कुमार कोमा डॉ0 महेश श्रीवास्तव	172
39.	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की विविध शाखाओं के विकास में प्राचीन भारत का योगदान	शालिनी पाठक	177
40.	दांतारामगढ़ तहसील (सीकर जिला, राजस्थान) में भूजल स्तर की गहराई का सिंचित क्षेत्रफल पर प्रभाव	राजेन्द्र कुमार यादव	181
41.	भारत के स्टाक मार्केट पर कोविड–19 का प्रभाव	डॉ0 मंजरी मिश्रा	187
42.	कृषि विधेयक और किसान आन्दोलन	डॉ0 विकास यादव	192
43.	ग्रामीण बाजार केन्द्रों में विक्रेताओं का व्यावहारिक प्रतिरूप : बालोद जिले के विशेष संदर्भ में	रीना	196
44.	बाल साहित्य की एक विधा : लोरी	डॉ0 फिरोजा जाफर अली माला निवरे	201
45.	हजारी प्रसाद द्विवेदी की छायावाद सम्बंधी दृष्टि	डॉ0 आभा शर्मा	205
46.	शिक्षकों की भूमिका द्वंद पर उनके कार्य संतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन	श्रीमती प्रीतिका ताम्रकर डॉ0 ज्योत्सना गडपयले डॉ0 कविता वर्मा	209
47.	शासकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के नियंत्रण अवस्थान का एक अध्ययन	वर्षा हरिहरनो डॉ0 (श्रीमती) वी. सुजाता	214
48.	संस्कृति का संकट बनाम बाजारवाद	प्रो0 मंजुला राणा	219
49.	नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में दाम्पत्य सम्बन्ध (शाल्मली उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	डॉ0 गोपीराम शर्मा सुमन बिश्नोई	222
50.	उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आधुनिकीकरण का उनके जीवन शैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	डॉ (श्रीमती) शोभा पुरकर श्रीमती हेमलता सिदार	226
51.	बीसवीं शताब्दी के नौवें दशक की सांप्रदायिक राजनीति और हिंदी उपन्यास	सुधीर प्रताप सिंह आनन्द कुमार त्रिपाठी	230
52.	महर्षि बाल्मीकि रचित योगवासिष्ठ में योग का स्वरूप	दीपक प्रो0 (डॉ0) सुभाष चन्द्र गुप्ता	235
53.	"बीसवीं" शती के अंतिम दो दशकों की महिला कथाकारों का "नारी–विमर्श"	डॉ0 शुभा माहेश्वरी	238

संपादकीय .....

नियमित अर्थात समाज, संस्था द्वारा निर्धारित या स्वंय उसके नियमों का पालन करते हुए जीव
अनुशासन है। अनुशासन किसी वर्ग या आयु–विशेष के लोगों के ही नहीं, बल्कि सभी के लिए परम आवश्यक हुआ
जाति, देश और राष्ट्र–जनों में अनुशासन का अभाव रहता है, वे अधिक समय तक अपना अस्तित्व नहीं व
किसी अन्य कारण से अस्तित्व बना भी रह जाए, पर अनुशासन के अभाव में स्वतंत्र सत्ता का बना रहना तो कदापि
करता है। इसलिए विद्यार्थी जीवन क्योंकि भविष्य के लिए तैयारी का समय माना जाता है। इस कारण अनुशासन
लिए और भी आवश्यक बल्कि परम आवश्यक हो जाया करता है। आज वह अपने जीवन को जिस प्रकार का
में ढालने का प्रत्यन कर लेगा, कल वही सब उसकी सफलता–असफलता का मानदंड बन जाएगा। इसी कारण
वर्ग के लिए अनुशासित रहने की बात विशेष रूप से कही जाती है। आज का विद्यार्थी ही कल का नेता तथा अन्य स
उन्हीं में से आगे बढकर कुछ लोगों ने देश–समाज की शासन–व्यवस्था को संभालना होता है। अतः क्यों न वह
व्यवस्था का आदी बन जाए, जबकि अनुशासन का अर्थ ही है–सुशासन और सुव्यवस्था। 'अनुशासन' शब्द 'अ
'शासन' शब्द के मेल से बना है। 'अनु' उपसर्ग का अर्थ होता है–पश्चात या साथ और 'शासन' का अर्थ है नियम
प्रकार जीवन और समाज में अपने घर–द्वार से लेकर विभिन्न और विविध क्षेत्रों के सुसंचालन के लिए जो नियम
गए हैं, जो व्यवस्थाएं निर्धारित की गई या सभ्य सामाजिकों के आपसी व्यवहारों से आप ही हो गई हैं, उनका पालन
अनुसार चलना ही वास्तव में 'अनुशसन' हुआ करता है। विशेषकर विद्यार्थी जीवन क्योंकि पढने–सीखने और भवि
समझ बनाने का जीवन हुआ करता है, अतः सभी प्रकार की निर्धारित और मान्य व्यवस्थाओं का पालन उसके लिए
जाया करता है। बड़े खेद के साथ कहना और मानना पड़ता है कि न केवल भारत बल्कि विश्व का विद्यार्थी वर्ग आज
अनुशासनहीन होता जा रहा है। विद्यार्थी वर्ग का अनुशासनहीन होने का अर्थ है देश के वर्तमान और भविष्य दोनों
से भटक जाना। इसे शुभ लक्षण नहीं कहा जा सकता। भारत जैसे विकासोन्मुख देश के लिए तो कदापि ही नहीं कह
इससे बचने की आवश्यकता है।

आज का विद्यार्थी या युवा वर्ग इतना अनुशासनहीन क्यों होता जा रहा है? प्रश्न करने पर उत्तर मिलता है
जीवन और समाज का अंग है, उसके अगुवा ही जब अनुशासन की धज्जियां उड़ा रहे हों, तब इस वर्ग से अनुशासन की
या मांग करना कोई अर्थ नहीं रखता। ऊपरी तौर पर निश्चय ही यह बात ठीक लगती है पर प्रश्न यह है कि तब
शुरुआत कहां से होगी? निश्चय ही जो आयु और व्यवहार के स्तर पर ढल चुके हैं, उनके द्वारा अब कुछ होने–हवाने
इसकी शुरुआत स्वेच्छा से विद्यार्थी और नवयुवा वर्ग को ही करनी होगी। ऐसा करने के लिए घर–परिवार और पूरे
उन्हें विद्रोह भी करना पड़े, तो करना होगा। आज जो काम वे शुरू करेंगे, कल वे स्वंय ही उसका सुफल भोगेंगे। इसी
अनुशासन की चर्चा चलती है, विद्यार्थी और युवा वर्ग का नाम अपने आप ही उछलकर सामने आ जाता है। इन्हीं को
करने पर बल दिया जाता है। जीवन के सामान्य व्यवहारों के स्तर पर हम पाते हैं कि आज का विद्यार्थी दूसरों की इ
नकल कर पाने में समर्थ नहीं रह गया। बुराईयों की नकल वह झटपट कर लेता है। उसके भटकाव और अनुशासनही
कारण यह फिसलन भरी मानसिकता ही है। होना यह चाहिए कि वह नीर–क्षीर विवेकी बनकर अच्छी बातों को सीखे, व्य
की नितांत उपेक्षा करता जाए। क्योंकि अनुशासन कोई बाहर से थोपी जा सकने वाली वस्तु नहीं, अतः मात्र यह प्रक्रिया
से ही वह स्वंय तो अनुशासित होगा ही, आने वाली पीढ़ी का भी आदर्शन बन सकेगा। जैसा कि हम पहले भी
जीवन–समाज के व्यापक स्तर पर मान्य नियमों के अनुसार चलना ही अनुशासन है। पर आज का विद्यार्थी विद्या–उ
अपने मुख्य कार्य में भी उस सबकी अवहेलना करने लगा है–दुखद स्थिति मुख्यतः यही कही जा सकती है। इसी से छु
बहुत ही आवश्यक है। यह भी एक सत्य है कि आज का विद्यार्थी पहले से कहीं अधिक सजग, बुद्धिमान और भवि
जागरुक है। इसके साथ व्यवहार के स्तर पर यदि वह अपने–आपको स्वेच्छा से अनुशासित भी कर ले तो सोने पर
बात हो जाएगी। विद्यार्थी के लिए सबसे बड़ा अनुशासन यही हो सकता है कि वह सभी प्रकार की व्यर्थ की बातों से
अपनी शिक्षा और शिक्षा–जगत के प्रति आस्थावान हो जाए। यह आस्था वस्तुतः उसके अपने व्यक्तिव और उसके माध्य
राष्ट्र बल्कि समूची मानवता के प्रति जागरुक होने की प्रतीक हैं। उसकी यह आस्था कोई कारण नहीं कि अन्यों को भी
अनुशासनवान न बना दे। आवश्यकता इन तथ्यों को समझकर जीवन में आज से आरंभ कर देने की है।

डॉ. विनय कु
प्रधान संपा

ISSN - 2348-2397
UGC CARE LISTED JOURNAL
DIS
शोध सरिता
January-March, 2021
Vol. 8, Issue 29
Page Nos. 47-51
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

हिंदी साहित्य में स्त्री पर श्रेष्ठतम काव्य गोपी विरह वेदना

डॉ० उमेश कुमार सिंह*

शोध सारांश

विरह वियोग को दुःख की अवस्था में अत्यंत वेदनीय माना गया है। इसे अन्य शब्दों में संयोग के सुख के अभाव को विरह की दुःखद एवं पीड़ादायक स्थिति कहा जा सकता है। दुख की परिभाषा के अनुसार सर्वेशामेव प्रतिकूल वेदनीय दुखम अर्थात सबकी प्रतिकूल बातों को दुख कहते हैं। वियोग में पीड़ा का अधिक प्राधान्य होता है। इस कारण वियोग का काव्य संयोग की अपेक्षा अधिक भावपूर्ण एवं मार्मिक होता है। गोपियों को श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर विमुख होने बिछुड़ जाने पर अत्यंत दुख हुआ होगा। आज शताब्दियों बाद विश्व महामारी के कोरोना काल में अपनों से बिछुड़ने का दुख आज के मानव ने बहुत बड़ी संख्या में रोते बिलखते सिसकते तड़फते हुये प्रत्यक्ष अपनी आँखों के सामने घटते देखा है। इस दुख से कम गोपियों का दुख श्रीकृष्ण से बिछुड़ने पर कम नहीं हुआ होगा। भ्रमरगीत में मात्र गोपियों के विरह वर्णन अर्थात नारी की मर्मांतक वेदना को चित्रित किया गया है। विश्व साहित्य में नारी की विरह वियोग वेदना का सजीव वर्णन एवं उतक्रष्टतम रस के महत्व की दृष्टि से विशिष्ट अद्वितीय एवं उल्लेखनीय है।

Keywords : रूपरसरांची – रूप के रस में पगी हुई, राजपथ – राजपथ के समान प्रशस्त और बढ़ा, रहित काँपो – कंपानोक पर लासा लगा हुआ, परसत् – स्पर्श करते ही, मदन सरघाती – कामदेव के वाणों के समान घातक, हरिस्रम जल – कृष्ण के साथ की गई प्रेम क्रीड़ाओं के समय शरीर से निकाला हुआ पसीना, अंतर तनु – हृदय और शरीर।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र में समीक्षात्मक तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक पद्धति के आधार पर सूरदास द्वारा रचित गोपी विरह के बारे में शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा।

विश्वसाहित्य में स्त्री पर केंद्रित अतुलनीय साहित्य की रचना की गई है जिस में काव्य में कवि जायसी के नागमती विरह वर्णन के अतिरिक्त संदेश रासक अपभ्रंस में एवं मेघदूत संस्कृत जैसी रचना देखी जा सकती हैं किन्तु स्त्री विरह वर्णन पर केंद्रित अद्भुत काव्य की रचना करने वाले महाकवि अतिविशिष्ट एवं अभूतपूर्व कवि हैं जिंहोने स्त्री पक्ष लेते हुए गोपियों के मुख से उनके के समर्थन एवं सगुण भक्ति के पक्ष में अद्भुत अनेक तर्क प्रस्तुत किए हैं। सूरदास रचित भ्रमरगीतसार में अद्वतीय नारी की विरहण्वेदना को चित्रित किया है। वियोग वेदना का सजीव वर्णन उतक्रष्टतम रस के महत्व की दृष्टि से विशिष्ट एवं उल्लेखनीय है। इस बात की पुष्टि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास में की है सूरसागर का सबसे मर्मस्पर्शी और वाग्वैदग्ध अंश भ्रमरगीत है जिसमें गोपियों की वचन वक्रता अत्यंत मनोहारिणी है। ऐसा सुंदर उपालंभ काव्य और कहीं नहीं मिलता।1 गोपियों के उद्धव से अद्भुत वाकचातुर्य के द्वारा परास्त करने के साथ साथ निर्गुण पर श्रीकृष्ण से अनन्य और एकनिष्ठ प्रेम को दर्शाते हुये सगुण की विजय अर्थात जीत को प्रदर्शित किया गया है।

लरिकाई को प्रेम कहौ अलि कैसे करिकै छूटत्
कहा कहौं ब्रजनाथ चरित अब अंतरगति यों लूटत
चंचल चाल मनोहर चितवनि वह मुसुकानि मंद धुनि गावत।2

गोपियाँ और श्रीकृष्ण का प्रेम लड़कपन से रहा है। बचपन अथवा लड़कपन का प्रेम गहराए निस्वार्थ और एकनिष्ठ माना जाता है। इसको मनुष्य मात्र के लिए भुलाना अत्यंत मुश्किल होता है। गोपिकाएँ इसी साहचर्य प्रेम की एकनिष्ठता का उल्लेख करती हुई कह रही हैं। हे उद्धव यह बताओ कि बचपन में साथ साथ रहने से उत्पन्न हुआ प्रेम किस प्रकार टूट अथवा छूट सकता है। ब्रिजनाथ अर्थात श्रीकृष्ण के चरित्र एवं प्रेम क्रीड़ाओं का कहां तक वर्णन करें। हम अब उनके चरित्रों का स्मरण आते ही अपनी सुध बुध भूल जाती हैं। उनकी चंचलता रो भरी चाल वह मनोहर चितवन एवं मोहन मुस्कान और मंद स्वर में गाना कभी विस्मृत नहीं होता है।

*एसोसिएट प्रोफेसर – हिंदी विभाग एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स वर्धा, महाराष्ट्र भारत

हरि काहे के अंतर्यामी
जौ हरि मिलत नहीं यहि औसर अवधि बतावत लामी।।
अपनी चोप जाय उठि बैठे और निरस बेकामी।
जो कह पीर पराई जानै जो हरि गरुड़ागामी।।3

गोपियां उद्धव से प्रश्न कर रही हैं कि हरि कैसे अंतर्यामी हैं, कैसे सबके ह्रदय की बात जानते हैं, वे क्या इस अवसर पर हमारे विरह में अत्यधिक व्याकुल होने पर आकार मिलते नहीं हैं एवं बहुत समय बाद मिलने का संदेश भेजते रहते हैं। उनके ह्रदय में हमसे मिलने की कमाना ही नहीं रही है। वे गरुड पर सवारी करने वाले हैं कभी पैदल नहीं चलते हैं वे पैदल चलने वालों के पैरों में फटी हुई बिवाइयों के कष्ठ और पीड़ा को क्या जानें।

अपने स्वारथ को सब कोऊ।
चुप करि रहौ मधुप रस लंपट ! तुम देखे अरु बोऊ।।
औरौ कछू संदेस कहन को कह पठयो किन सोऊ।
लींहै फिरत जोग जुवतिन कौं बड़े सयाने दोऊ।।4

गोपियां खीजकर दुखी मन से जली कटी बात सुना रही हैं। हे उद्धव इस संसार में सब अपने स्वार्थ को देखने के अतिरिक्त दूसरों की कोई चिंता नहीं करता है। रस लोभी लंपट मधुप तुम अब चुप रहो और अधिक बातें मत बनाओ। हमने यअर्थात गोपियों नेद्ध तुम्हें और उनको अर्थात श्रीकृष्ण को खूब देख परख लिया है। तुम दोनों ही एक समान स्वार्थी हैं। श्रीकृष्ण ने यदि तुम्हें हमारे पास कुछ संदेश कहने के लिए भेजा होए तो उसे भी क्यों नहीं कह डालते हैं। तुम भी हम युवतियों के लिए योग संदेश दे रहे हो और उन्होंने भी तुम्हें यही संदेश देने के लिए भेजा है।

अंखियाँ हरि दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूपरसरांची ये बतियाँ सूनि रूखी।।
अवधि गनत इकटक मग जोवत तब एती नहीं झूखी।5

गोपियाँ उद्धव से कह रही हैं हमारे नयन श्रीकृष्ण के दर्शनों की भूखे हैंए हमारी आँखें श्रीकृष्ण के रूप और उसके रस में पगी और अनुरक्त हैं। तुम्हारे योग की नीरस बातें सुनकर कैसे धैर्य धारण करें। हमारी ये आँखें श्रीकृष्ण के लौटर आने की अवधि का एकण्एक दिन गिनती हुई टकटकी बांधे मार्ग की ओर देखा करती रहती थीं। उस समय भी इतनी अधिक संतप्त नहीं हुई थीं किन्तु तुम्हारे इस योग संदेशों को सुनकर एकदम व्याकुल और दुखी हो उठी हैं

हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन बच क्रम नंदन सों उर यह दृढ़ करि पकरी।।
जागत सोवत सपने सौंतुख कान्ह कान्ह जॅक री।
सुनतहि जोग लागत ऐसों अलि! ज्यों करुई ककरी।।6

गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रति अपने अटूट प्रेम को प्रदर्शित करते हुये कहती हैं। हमारे लिए श्री कृष्ण हारिल पक्षी की लकड़ी की तरह बन गए हैं, जैसे हारिल पक्षी किसी भी दशा में होने पर अपने पैरों में लकड़ी अथवा किसी तिनके को पकड़े रहता है। उसी प्रकार हम भी निरंतर श्रीकृष्ण का ही ध्यान करती रहती हैं। हमने मनए वचन और कर्म से नन्दन रूपी लकड़ी अर्थात कृष्ण के रूप और उनकी स्मृति अपने मन द्वारा कसकर पकड़ ली है। अब उनसे हमें कोई भी नहीं छुड़ा सकता है। हमारा मन जागते सोते और स्वप्न में सदैव श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण की रटन लगाए रहता है।

निरखत अंक स्यामसुंदर के बारबार लावति छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलि कै ह्वै गइ स्याम स्याम की पाती।।

गोकुल बसत संग गिरिधर के कबहुँ बयारि लगी नहिं ताती।7

गोपियाँ श्रीकृष्ण की पत्री को देखकर भाव विह्वल हो उठी हैं सूरदास गोपियों की इस भाव विह्वल दशा का चित्रण कहते हुये कहते हैं। कि श्यामसुंदर के पत्र में लिखे अक्षरों को निरख निरखकर गोपियाँ बार बार उस पत्र को स्नेह भाव विह्वल होकर अपनी छाती से लगा लेती हैं। प्रेम की अधिकता के कारण उनके नेत्रों से इस अवसर पर निरंतर अश्रुवर्षा हो रही है। नेत्रों का जल आँसू एवं उस पत्र के कागज पर लिखे काली स्याही के अक्षर आपस में मिलने के कारण श्याम का पत्र काले रंग का हो गया है। गोपियों के लिए पत्र ही श्याम बन गए हैं। उस पत्र के दृश्यावलोकन से गोपियों के मन में पूर्वकाल की स्मृतियाँ याद आने लगीं हैं। गोपियाँ जब गोकुल के गिरधर कृष्ण के साथ रहती थीं तब उन्हें कभी हवा का गरम होने का अहसास नहीं हुआ। अर्थात कभी कोई कष्ट नहीं हुआ था।

रहु रे मधुकर! मधुमतबारे।
कहा करौं निर्गुण लै कै हौं जीवहु कान्ह हमारे।।
लोटत नीच परागपंग में पचत न आपु सम्हारे।
बारम्बार सरक मदिरा की अपरस कहा उघारे।।8

गोपियाँ अपने इष्ट श्रीकृष्ण के प्रति अपना अनन्या प्रेम एवं निष्ठा को भ्रमर की उछ्ड्खलता से तुलना करते हुए कह रही हैं रे मधु के प्रेम में दीवाने रहने वाले मधुप भ्रमर ठहर जा। चुप रह। हम तेरे निर्गुण ब्रह्म को लेकर क्या करें। हमारी तो बस यही कामना है कि हमारे श्रीकृष्ण सदैव चिरंजीवी हों। तू तो सदैव पुष्पों के पराग की कीचड़ में लोटता रहता है कष्ट उठता है और नशे में मस्त होकर सुध बुध खो बैठता एवं गिरता पड़ता है। तू बार बार उसी मदिरा का सेवन करता रहता है। तुम अपने रहस्यों को स्वयं क्यों उघाड़ते फिरते हो क्यों कि नीरस और घिनोनी बातें उखाड़ने से लाभ कम और हानि अधिक होती है।

बिलग जनि मानौ हमरी बात।
डरपति बचत कठोर कहति मति बिनु पति यों उठि जात।।
जो कौउ कहत जरै अपने कछु फिरि पाछे पछितात।9

गोपियाँ उद्धव को अपनी जलीण्कटी सुनाने के पश्चात अपनी करनी पर पश्चाताप करके कह रही हैं। हे उद्धव तुम हमारी बात का बुरा मत मानो। हमें तुमसे कठोर बातें करते हुये डर

लगता है क्योंकि विवेकहीन बातें करने से व्यक्ति की मर्यादा उसी प्रकार नष्ट हो जाती है जिसप्रकार तुम्हारी हो गई है क्योंकि तुम हमसे साक्षात श्रीकृष्ण के प्रेम को त्यागने और निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने के लिए कह रहे होए यदि हमने अपने मन जलने एवं पीड़ित होने पर कुछ ऊट पटांग बातें कह भी दी हैं तो उसके लिए मन पछताता रहता है। तुम्हारी दुखदायी बातें सुनकर हमारे मुख से कठोर वचन निकल गए हैं उनका हमें पश्चाताप हो रहा है।

काहे को रोकत मारग सूधो
सुनहु मधुप ! निर्गुण–कंटक तें राजपथ क्यों रूधों
कै तुम सिखै पठाए कुब्जाए कै कही स्यामघन जू धों
वेद पुराण सुमृति सब ढूँढ़ौ जुवतिन जोग कहूँ धों
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो। 10

प्रस्तुत पद में गोपियाँ उद्धव से निर्गुण ब्रह्म के बारे में मनोरंजक प्रश्न पूंछती हुई उन पर व्यंग कर रही हैं। गोपियाँ भ्रमर को इंगित करते हुए पूछती हैं। हे मधुप तुम्हारा निर्गुण किस देश का रहने वाला है। हम तो मात्र अपने आराध्य श्रीकृष्ण का निवास जानती है। हम तुम्हें अपनी कसम देकर पूंछ रही हैं तुम अपने प्रशन्नचित्त मन से समझा दीजिए उनके कौन माताण्पिता हैं एवं उनकी पत्नी और कौन दासी उनकी सेवा करती है। उनका रूप रंग एवं वेश भूषा कैसी है और उन्हें कैसा रस अधिक प्रिय है क्योंक ब्रह्म को सम्पूर्ण संबंधो एवं विशेषताओं से रहित बताया गया है।

निर्गुण कौन देस को बासी
मधुकर! हँसि समुझाय सौंह दै बूझति साँच न हाँसी।।
को है जनक जननि को कहियत कौन नारि को दासी
कैसों बरन भेस है कैसों केहि रस कै अभिलासी।।11

प्रस्तुत पद में गोपिया अपनी वाक पटुता के अनुसार उद्धव को छकाते हुये शशर्त निर्गुण ब्रह्म को स्वीकार सकती हैं। वे कहती हैंए तुम अपने ब्रह्म को हमें मुकुट और पीताम्बर वस्त्र धारण किए हुये दिखला दो अर्थात निर्गुण ब्रह्म श्रीकृष्ण के वेश को धारण करके हमारे समक्ष आए। तो हम उसे स्वीकार कर लेंगी। ऐसा होने पर हम सभी गोपियाँ निर्गुण का ही भजन करने लगेंगी। इसके लिए हमें संसार से गाली ही क्यों न खानी पड़ें।

प्रीति करि दीन्ही गरे छुरी।
जैसे बधिक चुगाय कपटकन पाछे करत बुरी।।
मुरली मधुर चेंप कर काँपो मोरचन्द्रठटवारी।
बंक बिलोकनि लूक लागि बस सकी न तनहिं सम्हारी।। 12

सूरदास द्वारा रचित पद में गोपियाँ कह रही हैं श्री कृष्ण ने पहले हमसे प्रगाढ़ प्रेम करके के बाद में हमारे गले पर छुरी चला दी है, हमारी हत्या सी कर दी है। उन्होने हमरो ऐसा व्यवहार किया है जैसे बहेलिया पहले कपट कर पक्षियों को चुगने के लिए दाना डालता है। और फिर उन्हें पकड़कर उसकी बुरी गति करता है अर्थात श्री कृष्ण ने पहले हमें अपने प्रेम के कपट जाल में फँसाने के बाद वियोग में तड़फता हुआ छोड़कर मर्मांतक पीड़ा देने पर तुले हुए हैं। उन्होने मुरली के मधुर स्वर रूपी लासा अपने हाथ रूपी बांस पर लगाकर कंपा बनाया है और फिर मयूर पंखों के मुकुट कि टटिया बनाकर उसके पीछे छिपकर हम गोपियों रूपी चिड़ियों को अपने प्रेम जाल में फांस लिया है और अपनी तिरछी चितवन द्वारा हमारे हृदय में प्रेम कि दहकती ज्वाला सी फूँक दी है। प्रेम कि इस ज्वाला के कारण हम अपनी सुधण्बुधि खो बैठी हैं। और विवश पक्षी कि तरह श्रीकृष्ण रूपी बहेलिये के पूर्णतः वश में हो गई हैं।

कोउ ब्रज बांचत नाहिंन पाती।
कत लिखि लिखि पठवत नंदनंदन कठिन बिरह की काती।।
नयन सजल कागद अति कोमल कर अंगुरी अति ताती।
परसत जरै बिलोकत भीजै दुहूँ भाँति दुख छाती।।13

प्रस्तुत पद में गोपियाँ कहती हैं इस ब्रज में कोई भी श्रीकृष्ण द्वारा भेजी हुई पत्री को नहीं पड़कर सुना रहा है। हमारे नन्द नन्दन दुखदायी विरहावस्था में जाने क्यों परीक्षा ले रहे हैं। पत्री को पढ़वाने में और अधिक कष्ट हो रहा है। हमारे नेतों में आँसू भरे हुये हैं। और विरहाग्नि के कारण हमारे हाथ कि अंगुलियाँ गरम हो रही हैं। हम अंगुलियों से पाती छूते ही जलने लगती है। नेत्रों से इस ओर देखती हैं तो आँसू गिरने से भीग जाती है। इन दोनों दशाओं में इसे पढ़ न सकने के कारण हमारे हृदय को अत्यधिक पीड़ा हो रही है।

बिन गोपाल बैरनि भइं कुंजै।
तब ये लता लगति अति सीतल अब भईं विषम ज्वाल की पुंजै।।
वृथा बहति जमुना खग बोलत बृथा कमल फूलै अलि गुँजै।।
पवन पानी घनसार संजीवनि दाधिसुत किरण भानु भइं भुंजै।।14

इस पद में गोपियाँ अपने विरह की पीड़ा दायक स्थिति में गोपाल के बिना अर्थात श्रीकृष्ण के अभाव में कुंजें अब क्यों शत्रु के समान दुख पहुंचा रही हैं। इन्हें देखकर श्रीकृष्ण की अधिक याद सता रही है। जब श्रीकृष्ण हमारे साथ गोकुल में थेए तब ये लताएँ हमें अत्यंत शीतल प्रतीत होती थीं। अब उनके अभाव में भयंकर ज्वालाओं की लपटों के समान प्रतीत हो रही हैं। अब यह यमुना वृथा बहती है पक्षी वृथा कलरव करते हैं कमल के पुष्प वृथा खिलते हैं और उनपर भ्रमर व्यर्थ गुंजार करते हैं अर्थात इस सब सबको देखकर दुख उत्पन्न हो रहा है।

संदेसनि मधुबन कूप भरे।
जो कोउ पथिक गए हैं ह्याँ ते फिरि नहिं अवन करे।।
कै वै स्याम सिखाय समोधेए कै वै बीच मरे 15

प्रस्तुत पद में गोपियाँ अपनी व्यथा कह रही हैं हमने इतने संदेश लिख लिखकर भेजे है कि मथुरा के शायद कुएं भी भर गए होंगे किन्तु एक का भी उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है। गोकुल से जितने भी पथिक मथुरा गए हैं उनमें से एक भी वापस लौटकर वापस नहीं आया है। हमें ऐसा संदेह होता है कि श्रीकृष्ण ने उन्हें समझा बुझाकर लौटने नहीं दिया है। अथवा वे कहीं बीच में म्रत्यु को प्राप्त हो गए हैं। नंदनंदन अपना संदेश नहीं भेजते हैं और हमारे संदेशों को भी अपने पास ही रख लेते हैं।

उर में माखांचोर गड़े।
अब कैसेहु निकसत नहिं ऊधो! तिरछे ह्वै जो अड़े।।
जदपि अहीर जसोदानंदन तदपि न जात छाँड़े। 16

गोपियाँ कह रही हैं। हमारे हृदय में माखनचोर अर्थात श्रीकृष्ण की मनभावन छवि मूर्ति गढ़ गई है उसे कितना भी प्रयास करें, किन्तु बाहर निकलती नहीं सकती है। उनकी माधुरी मूर्ति त्रिभंगी अर्थात ह्रदय में तिरछी होने के कारण गढ़ कर फंस गई है। हम किसी भी स्थिति में श्रीकृष्ण को भूलकर तुम्हारे निर्गुण ब्रह्म को अपने हृदय में धारण नहीं कर सकती हैं यद्यपि श्रीकृष्ण यशोदानंदन जाति के अहीर हैं फिर भी हम उन्हें नहीं छोड सकती हैं।

उपमा एक न नैन गही।
कबिजन कहत कहत चलि आएए सुधि करि करि काहू न कही।।
कहे चकोर मुख बिधु बिनु जीवनए भँवर न तहँ उड़ि जात।
हरिमुख दृकमलकोस बिछुरे तें ठाले क्यों ठहरात
खंजन मनरंजन जन जौ पै कबहु नाहिं सतरात।
पंख पसारि न उड़त मंद ह्वै समर समीप बिकात।।17

इस पद में गोपियाँ अपने नेत्रों के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कह रही हैं कि इन नयनों ने कविगणों द्वारा दी गई एक भी उपमा ग्रहण नहीं की है।

कवि प्राचीन काल से पशुण्पक्षियों आदि की उपमा देते चले आए हैं किन्तु किसी ने सोच विचार कर अच्छी उपमा नहीं दी है जो हमारे नेत्रों के पर उचित बैठ जाती। कवियों ने नेत्रों को चकोर के समान कहा किन्तु हमारे नेत्र तो श्रीकृष्ण के चंद्रण्मुख के बिना अभी तक जीवित हैं।

इसी प्रकार भ्रमरए खंजन एवं मृग आदि की उपमा दी है किन्तु यह सभी उपमाएँ उन्हें जँचती नहीं है अर्थात श्रीकृष्ण के विरह के वियोग में गोपियों को कुछ भी नहीं भाता है। विरह की स्थिति को कोई विरही ही जान सकता है।

अति मलीन वृषभानुकुमारी।
हरिण्म्रमजल अंतरण्तनु भीजे ता लालच न घुआवति सारी।
अधोमुख रहित उरघनहिं छितवति ज्यों गथ हारे थकित जुआरी। 18

बृषभानु कुमारी अर्थात श्री राधा जीए श्रीकृष्ण के विरह में अत्यंत मलीन रहने लगी हैं। वह अपने वस्त्रों को साफ नहीं करती एवं मैली साड़ी पहने रहती हैं। इसका कारण श्रीकृष्ण के साथ केलि क्रीडा करते समय प्रेमवेश के कारण कृष्ण के शरीर से निकले हुये पसीने से राधा का सर्वांग और साड़ी भीग गई गई। वह सदैव नीचा मुख किए उन्ही पूर्व मधुर स्मृतियों में खोई बैठी रहती हैं। कभी मुख उठाकर ऊपर नहीं देखती हैं। राधा भी अपना सर्वस्व श्री कृष्ण को अर्पित कर लुटी हुई सी उदासा बैठी रहती हैं।

निष्कर्ष : सूरदास ने गोपियों के विरह वर्णन को अदभुत वाकचातुर्य से करना मेरी दृष्टि में नारी विमर्श की प्रथम अवस्था कही जा सकती है अथवा इसे सूर की सगुण कृष्ण भक्ति भावना भी माना जा सकता है जिसमें सूरदास पूरी तरह से गोपियों के साथ एवं पक्ष में खड़े हुए दृष्टिगोचर होते हैं। भ्रमरगीत में सूरदास ने जिन पदों की रचना की है उनमें गोपियों ने श्रीकृष्ण को स्मरण करते रहने और अपने सगुण मार्ग के नियम से विचलित न होने अर्थात प्रत्येक स्थिति में सगुण मार्ग पर चलना एवं उससे विचलित न होते हुये निर्गुण ब्रह्म का पूरी तरह बहिष्कार करती हैं।

उनमें विशेष रूप से गोपियों का लड़कपन का प्रेम निस्वार्थ और एकनिष्ठ होता है जिसे भुलाना अत्यंत मुश्किल होता है श्रीकृष्ण का गोपियों के अतिव्याकुल होने पर भी न मिलनाए उद्धव को दुखी मन से जली कटी सुनना गोपियों की आँखों का श्रीकृष्ण के दर्शनों की लालसा होना श्रीकृष्ण गोपियों के लिए हारिल की लकड़ी के समान उपयोगी होना गोपियों का श्रीकृष्ण के निवास को ही जानना और निगुण ब्रह्म का तिरस्कार करनाए असंभव निर्गुणण्ब्रह्म को श्रीकृष्ण के वेश में मुकुट और पीताम्बर वस्त्र रूप में ग्रहण करना गोपियों के श्रीकृष्ण उनके गले पर छुरी चलानाए गोपियों द्वारा श्रीकृष्ण की पत्री को कृष्ण रूप में मानना श्रीकृष्ण के बिना कुंजों का शत्रु के रूप में महसूस होना संदेश से मथुरा के कुओं का भरना ह्रदय में माखनचोर का गड़नाए कवियों की उपमाओ को नयनों के ग्रहण न करना एवं बृषभानकुमारी अर्थात श्रीराधा का श्रीकृष्ण के अभाव में मलीन होना आदि विभिन्न विरह की अवस्थाओं में गोपियों का श्रीकृष्ण के लिए व्याकुल रहना ही सगुण रूप में स्वीकारना एवं निर्गुण ब्रह्म का नकार एवं व्यंग करती हुई परिलक्षित होती हैं जो हिन्दी साहित्य में अद्वितीय एवं अप्रतिम हैं।

सन्दर्भ :–

1. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र संवत 2069 हिंदी साहित्य का इतिहास नागरी प्रचारिणी सभा आनंद प्रेस वाराणसी
2. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, सं भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत और भ्रमरगीत सार वाणी प्रकाशन 4695 21 दरियागंज नई दिल्ली 110002 पद 34 पृष्ठ सं 73
3. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत पद 37 पृष्ठ सं 74

107

4. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 39 पृष्ठ सं 74
5. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 42 पृष्ठ सं 75
6. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 52 पृष्ठ सं 77
7. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 57 पृष्ठ सं 79
8. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 61 पृष्ठ सं 80
9. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 59 पृष्ठ सं 79
10. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 62 पृष्ठ सं 80
11. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 64 पृष्ठ सं 81
12. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 75 पृष्ठ सं 84
13. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 76 पृष्ठ सं 85
14. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 85 पृष्ठ सं 87 88
15. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 89 पृष्ठ सं 89
16. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 95 पृष्ठ सं 90
17. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 97 पृष्ठ सं 91
18. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 100 पृष्ठ सं 91

❒❒❒

PDF Created Using

Camera Scanner

Easily Scan documents & Generate PDF

https://play.google.com/store/apps/details?id=photo.pdf.maker